बाला देवी

ममता कुमारी *

29 वर्ष की बाला देवी केवल एक नाम ही नहीं है, बल्कि उन सभी महिलाओं के लिए एक पहचान और मिसाल बन चुकी है जो दर्शाता है कि महिलाएँ स्वयं अपनी पहचान बनाने के लिए उत्साह के साथ प्रत्येक क्षेत्र में डर के माहौल में भी निडरता से आगे बढ़ रही हैं। बाला देवी का जन्म 2 फरवरी 1990 को मणिपुर में हुआ था। बाला देवी एक भारतीय महिला फुटबॉलर हैं, जो भारत की महिला टीम और मणिपुर की महिला टीम के लिए आगे रहती हैं। अगर आकड़ों के हिसाब से देखें तो 15 साल की उम्र में पहली बार भारत के लिए खेलने वाली महिला खिलाड़ी थीं, जिन्हें 2002 में टूर्नामेंट का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया गया था।

स्वर्ण पदक जीतकर उन्होंने अपने राज्य को एक अलग ही पहचान दी। वह अभी तक फुटबॉल टीम के लिए सबसे अधिक गोल करने वाली खिलाड़ी हैं। बाला ने 2010 के बाद से अब तक 58 मैचों में 52 गोल किए हैं। बाला को 2015-2016 में अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (ए.आई.एफ.एफ.) ने 'वुमेंस प्लेयर ऑफ द ईयर' पुरस्कार से नवाजा था।

बाला देवी स्कॉटलैंड के क्लब रेंजर्स एफ.सी. से 18 महीने का करार करने जा रही हैं। ऐसा करने वाली बाला देश की पहली महिला फुटबॉलर हैं। बाला देवी रेंजर्स के लिए खेलने वाली पहली एशियाई इंटरनेशनल फुटबॉलर बन जाएंगी जो महज महिलाओं के लिए ही नहीं अपितु सभी युवाओं के लिए ही एक प्रेरणास्त्रोत हैं। इस करार से खुश बाला देवी ने स्वयं कहा कि "मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं एक दिन दुनिया के सबसे बड़े क्लबों में से एक के लिए यूरोप में फुटबॉल खेल पाऊँगी। मुझे उम्मीद है कि रेंजर्स के साथ मेरा यह करार भारत में फुटबॉल को पेशे के तौर पर अपनाने और इसमें बड़ा करने की चाह रखने वाली हजारों लड़कियों को प्रेरित करेगा।" यह उनका सब्र ही था कि वह इस मुकाम तक पहुँची हैं या यूँ कहे कि कभी खुद को कमजोर न पड़ने देने की शिद्दत ने उन्हें इस मुकाम तक पहुँचाया है।

बाला केवल अपने राज्य के लिए ही एक मजबूती बन कर नहीं उभरी है... बल्कि देश और हर उस महिला के लिए मजबूती बनकर उभरी हैं, जिनके अंदर एक प्रतिभा...; एक जज़्बा है... और कुछ बड़ा करने का उत्साह है। बाला देवी ने ये बता दिया कि महिलाएँ खेल में भी पीछे नहीं हैं, उनमें वो जज़्बा एवं मजबूती भी है, जिसके बल पर वह देश के लिए ही नहीं बल्कि विश्व के लिए भी मिशाल बन सकती हैं तथा उन सभी लड़कियों के लिए जो हर राज्य के छोटे-छोटे गाँवों में..., किसी झोपड़ी में...., रहकर भी वहाँ की मिट्टियों में ही अपने सपने को मजबूती के साथ बुनने में लगी रहती हैं और एक दिन बाला देवी जैसी महिला के रूप में भी उभरती हैं और एक इतिहास रचती हैं।

*****

* एम.ए. (द्वितीय वर्ष), एनसीडब्ल्यूईबी, दिल्ली विश्वविद्यालय।